Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

किशोरों में पारिवारिक संबंध और अध्ययन आदतों के बीच संबंध का एक अध्ययन

आरती सेवक

शोधकर्त्री, शिक्षा संकाय,

माधव विश्वविद्यालय, सिरोही, राजस्थान, भारत।

डॉ सीमा जोशी

शोध–निर्देशिका, शिक्षा संकाय,

माधव विश्वविद्यालय, सिरोही, राजस्थान, भारत।

सार

बच्चों में उचित अध्ययन की आदत विकसित करने में घर महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वह अपने माता–पिता से प्यार और स्नेह पाता हैं। यदि बच्चा परिवार द्वारा प्रदत्त सुविधाओं का आनंद लेता है, तो वह सकारात्मक अध्ययन आदत विकसित करने में सक्षम हो सकता है। अध्ययन की आदतों का विद्यार्थियों की उपलब्धि पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है। शोध का उद्देश्य उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के पारिवारिक संबंधों तथा अध्ययन आदतों में लिंग के अन्तर को ज्ञात करना हैं। साथ ही पारिवारिक संबंध और अध्ययन आदतों में सहसंबंध स्थापित करना हैं। शोधकर्त्री ने इस हेतु गुजरात राज्य के गांधीनगर जिले के उच्च माध्यमिक स्कूलों में पढ़ने वाले 60 छात्र–छात्राओं का चयन किया और पारिवारिक संबंधों को मापने के लिये डॉ. (श्रीमती) जी. पी. शौरी तथा डॉ. जगदीश चन्द्र सिन्हा द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण पारिवारिक संबंध सूची तथा अध्ययन आदतों को मापने के लिए एम एन पलसाने और अनुराधा शर्मा (2014) द्वारा विकसित मानकीकृत अध्ययन आदत सूची का उपयोग किया हैं। निष्कर्ष रूप में पाया कि माता पिता सामुहिक रूप से अपने लड़के और लड़कियों के संबंध में समान विचार रखते हैं। अध्ययन की आदतों को ले कर छात्र और छात्राओं में सार्थक रूप से भिन्नता हैं। वहीं पारिवारिक संबंध एवं अध्ययन आदत में कोई सार्थक संबंध नहीं पाया गया।

सुचकांक: पारिवारिक संबंध, अध्ययन आदत, छात्र–छात्राएँ

परिचय

किशोरावस्था शब्द लैटिन किशोरावस्था से निकला है, जिसका अर्थ है 'बड़ा होना', शारीरिक और मनोवैज्ञानिक विकास का एक संक्रमणकालीन चरण है जो आम तौर पर यौवन से कानूनी वयस्कता (बहुसंख्यक की उम्र) की अवधि के दौरान होता है। किशोरावस्था आमतौर पर किशोरावस्था से जुड़ी होती है लेकिन इसकी शारीरिक, मनोवैज्ञानिक या सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ पहले शुरू हो सकती हैं। बहुत से लोग सोचते हैं कि जैसे–जैसे वे किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं, वैसे–वैसे परिवार बच्चों के लिए कम महत्वपूर्ण हो जाते हैं। लेकिन उनके बच्चे को वहां परिवार और समर्थन की उतनी ही जरूरत है, जितनी उन्हें बचपन में मिली थी।

यह सच है कि किशोरावस्था के दौरान पारिवारिक रिश्ते बदल जाते हैं। जब उनका बच्चा छोटा था, तो माता–पिता की भूमिका उनका पालन–पोषण और मार्गदर्शन करना था। अब वे पा रहे होंगे कि माता–पिता का अपने बच्चे के साथ संबंध और अधिक समान होता जा रहा है।

अधिकांश युवा लोगों और उनके परिवारों में इन वर्षों के दौरान कुछ उतार–चढ़ाव आते हैं, लेकिन आमतौर पर किशोरावस्था के अंत तक चीजें बेहतर हो जाती हैं क्योंकि बच्चे अधिक परिपक्व हो जाते हैं। और पारिवारिक रिश्ते सही तरीके से मजबूत बने रहते हैं।

किशोरों के लिए, माता–पिता और परिवार देखभाल और भावनात्मक समर्थन का एक स्रोत हैं। परिवार किशोरों को व्यावहारिक, वित्तीय और भौतिक सहायता देते हैं। और अधिकांश किशोर अभी भी अपने परिवार के साथ समय बिताना, विचारों को साझा करना और मौज–मस्ती करना चाहते हैं।किशोरों का मूडी होना या एक–दूसरे से संवाद न करना सामान्य बात है, लेकिन फिर भी उन्हें माता–पिता की आवश्यकता होती है। बच्चा अभी भी अपने माता–पिता से प्यार करता है और चाहता है कि वे अपने जीवन में शामिल हों, भले ही कभी–कभी उनका रवैया, व्यवहार या शरीर की भाषा यह कह सकती है कि वे नहीं करते हैं।

मानव समाज के संदर्भ में, एक परिवार (लैटिन शब्द फमिलिया से) लोगों का एक समूह है जो या तो आम सहमति (मान्यता प्राप्त जन्म से) या आत्मीयता (विवाह या अन्य रिश्ते से) से संबंधित है। परिवारों को अपने सदस्यों और समाज की भलाई को बनाए रखना है। आदर्श रूप से, परिवार पूर्वानुमेयता, संरचना और सुरक्षा की पेशकश करेंगे क्योंकि सदस्य परिपक्व होते हैं और समुदाय में भाग लेते हैं। अधिकांश समाजों में, यह परिवारों के भीतर है कि बच्चे परिवार के बाहर जीवन के लिए समाजीकरण प्राप्त करते हैं। परिवार के सदस्यों के साथ संबंध पूरे जीवन में महत्वपूर्ण होते हैं। जैसे–जैसे हम परिपक्व होते हैं और जीवन के विभिन्न चरणों से गुजरते हैं, वे निश्चित रूप से बदलते हैं, लेकिन वे हमारे सामाजिक अस्तित्व की निरंतर नींव के रूप में बने रहते हैं। माता–पिता–बच्चे की बातचीत का बुनियादी महत्व है क्योंकि यह आमतौर पर किसी अन्य व्यक्ति के साथ पहला संपर्क होता है। हम अन्य मनुष्यों के साथ बातचीत करने के लिए तैयार दुनिया में आते हैं (डिस्सानायके, 2000), लेकिन उन अंतःक्रियाओं की विशिष्ट विशेषताएं एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति और परिवार से परिवार में भिन्न होती हैं, जो हमारे बाद के पारस्परिक व्यवहार के लिए महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। जीवन के पहले वर्ष के दौरान, जब संभावित व्यवहारों की सीमा स्पष्ट रूप से सीमित होती है, मानव शिशु चेहरे के भाव, शरीर की गतिविधियों और लोगों की आवाज के प्रति बेहद संवेदनशील होते हैं। बच्चे की देखभाल करने वाला व्यक्ति अक्सर माँ होता है, और बदले में, वह शिशु के प्रति समान रूप से संवेदनशील होती है (कोचनस्का, लैंग और मार्टेल, 2004)। जैसे ही वे बातचीत करते हैं, दो व्यक्ति संवाद करते हैं और एक दूसरे के कार्यों को सुदृढ़ करना (मरे और ट्रेवरथेन, 1986; ट्रेवरथेन, 1993)। वयस्क बच्चे के संचार में विभिन्न तरीकों से रुचि दिखाता है जैसे कि बच्चे की बात करना और अतिरंजित चेहरे का भाव प्रदर्शित करना। शिशु, बदले में, उपयुक्त ध्वनियों और भावों को बनाने का प्रयास करके वयस्क में रुचि दिखाता है। कुल

मिलाकर, इस तरह की पारस्परिक बातचीत दोनों के लिए एक सकारात्मक शैक्षिक अनुभव होती है। ऐसा लगता है कि शैक्षणिक प्रदर्शन में अध्ययन की आदतें सबसे महत्वपूर्ण भविष्यवक्ता–चर हैं।

अध्ययन की आदतें छात्रों द्वारा उपयोग की जाने वाली अध्ययन की विधियाँ हैं। यह एक उपयुक्त वातावरण के भीतर एक शैक्षणिक पाठ्यक्रमय हैं। दूसरे शब्दों में, अकादमिक कार्यों की सफल उपलब्धि के लिए समय का प्रबंधन करने की छात्रों की क्षमता हैं। बाजवा एवं अन्य द्वारा प्रस्तुत परिभाषा के अनुसार, निजी अध्ययन के लिए छात्र द्वारा चुनी गई विधि या कक्षा में सीखने के बाद किसी विषय पर महारथ होने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली तकनीक को अध्ययन की आदतों के रूप में जाना जा सकता है। अध्ययन की आदतें अकादमिक सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, और इन कौशलों का उपयोग किए बिना प्रभावी अध्ययन नहीं किया जा सकता है। जिन छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियां बेहतर होती हैं, वे खराब प्रगति करने वालों की तुलना में इन कौशलों का व्यापक उपयोग करते हैं। आंकड़ों के अनुसार, विश्वविद्यालय के लगभग एक तिहाई छात्रों को अकादमिक विफलता का खतरा है। शिराज यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल साइंसेज, देहबोजोर्गी और मूसेली में छात्रों की अकादमिक विफलता के कारणों की जांच करने पर पाया गया कि 43.4% असफल छात्रों के पास अध्ययन की कोई योजना नहीं थी। जिन लोगों के पास अध्ययन रणनीतियों के बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं है, उनके पास अध्ययन करने में अधिक समय व्यतीत करने के बावजूद, प्रभावी और टिकाऊ शिक्षण अभ्यास नहीं होंगे।

अध्ययन की आवश्यकता और महत्व

बच्चों में उचित अध्ययन की आदत विकसित करने में घर महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वह अपने माता–पिता से प्यार और स्नेह पाता हैं। यदि बच्चा परिवार द्वारा प्रदत्त सुविधाओं का आनंद लेता है, तो वह सकारात्मक अध्ययन आदत विकसित करने में सक्षम हो सकता है। अध्ययन की आदतों का विद्यार्थियों की उपलब्धि पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है। ये उन्हें न केवल बेहतर हासिल करने में मदद करते हैं, बल्कि अपने खाली समय का सदुपयोग करने में भी मदद करते हैं। माता–पिता और शिक्षक उन्हें सकारात्मक अध्ययन आदत विकसित करने में मदद कर सकते हैं जो उन्हें बेहतर प्रतिधारण शक्ति रखने, पुस्तकों से नोट्स तैयार करने, समझ के साथ पढने की क्षमता विकसित करने में सक्षम बनाएगा। प्रस्तुत अध्ययन बारहवीं कक्षा के छात्रों की पारिवारिक संबंधों और अध्ययन की आदत के संबंध में अध्ययन करने का एक विनम्र प्रयास है। यह अध्ययन माता–पिता के लिए फायदेमंद साबित हो सकता है क्योंकि इससे वे अपने बच्चों कोघर में अनुकूल वातावरण प्रदान करके बच्चों को अच्छी अध्ययन आदत विकसित करने में मदद कर सकते हैं।

समस्या कथन

किशोरों में पारिवारिक संबंध और अध्ययन आदतों के बीच संबंध का एक अध्ययन

अध्ययन का उद्देश्य

अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है

1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के पारिवारिक संबंधों में लिंग (छात्र एवं छात्रा) में अंतर का अध्ययन करना।

2. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के अध्ययन आदत में लिंग (छात्र एवं छात्रा) में अंतर का अध्ययन करना।

3. पारिवारिक संबंध और अध्ययन आदत के मध्य संबंध को ज्ञात करना।

परिकल्पना

1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के पारिवारिक संबंधों में लिंग (छात्र एवं छात्रा) का कोई सार्थक अन्तर नही होता हैं।

2. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के अध्ययन आदत में लिंग (छात्र एवं छात्रा) का कोई सार्थक अन्तर नही होता हैं।

3. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के पारिवारिक संबंध और अध्ययन आदत के मध्य सकारात्मक सहसंबंध होता है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन के लिये गुजरात राज्य के गांधीनगर जिले के 6 उच्च माध्यमिक स्कूलों में पढ़ने वाले 60 छात्र–छात्राओं (प्रत्येक विद्यालय से 10 विद्यार्थी जिनमें 5 छात्र एवं 5 छात्राओं) का जिनकी आयु 16 वर्ष से 18 वर्ष के बीच थी, का चयन किया गया। स्कूलों एवं छात्र–छात्राओं के चयन में सौद्देश्यात्मक न्यादर्श चयन प्रक्रिया को अपनाया गया।

उपकरण

- पारिवारिक संबंधों को मापने के लिये डॉ. (श्रीमती) जी. पी. शौरी तथा डॉ. जगदीश चन्द्र सिन्हा द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण पारिवारिक संबंध सूची का उपयोग किया गया है।
- अध्ययन आदतों को मापने के लिए एम एन पलसाने और अनुराधा शर्मा (2014) द्वारा विकसित मानकीकृत अध्ययन आदत सूची का उपयोग किया गया हैं।

पारिवारिक संबंध एवं अध्ययन आदतों के मध्य सहसंबंध ज्ञात करने के लिये पियर्सन प्रोडक्ट मोमेंट पद्धत्ति का उपयोग कर दोनों चरों के मध्य संबंध का आकलन करने का प्रयास किया गया। इसके अतिरिक्त लिंग अंतर को परखने के लिये मध्यमान, मानकविचलन एवं टी परीक्षण आदि सांख्यकिय पद्धत्तियों का उपयोग किया गया हैं।

प्रविधि

चयनित न्यादर्शों पर दोनों मानकीकृत सुचियों को प्रशासित किया गया। छात्र–छात्राओं से दोनों सूचियों को भरवाया गया और फिर उपकरणों के मेन्यूअल के आधार पर स्कोरिंग कर उन्हे सारणीकृत किया गया और विभिन्न सांख्यकिय तकनीकों को कम्प्यूटर के माध्यम से प्रयुक्त कर परिणामों को प्राप्त करने का प्रयास किया गया।

विश्लेषण

चयनित न्यादर्शों पर दोनों मानकीकृत सुचियों के प्रशासन एवं स्कोरिंग के आधार पर निम्न सारणियों को प्रदर्शित किया गया हैं।

पारिवारिक संबंध

सारणी संख्या 1 में छात्र–छात्रों के पारिवारिक संबंधों के मध्यमान, मानक विचलन और टी परीक्षण को दर्शाया गया हैं।

सारणी संख्या 1

छात्र–छात्रों के पारिवारिक संबंधों के मध्यमान, मानक विचलन और टी परीक्षण

चर	छात्र (N=60)		छात्रा (N=60)		टी मान	सार्थकता स्तर
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
मातृ स्वीकारोक्ती	17.517	1.742	16.400	1.834	3.420	0.01
पितृ स्वीकारोक्ती	14.750	2.047	16.950	2.029	5.910	0.01
मातृ पितृ स्वीकारोक्ती	32.267	2.449	33.350	2.686	2.310	असार्थक
मातृ एकाग्रता	14.017	1.873	12.850	1.876	3.409	0.01
पितृ एकाग्रता	11.267	1.973	13.483	2.054	6.030	0.01
मातृ पितृ एकाग्रता	25.283	2.518	26.333	2.808	2.160	असार्थक
मातृ परिहार	13.033	2.285	14.017	1.873	2.580	असार्थक
पितृ परिहार	13.483	2.054	11.267	1.973	6.028	0.01
मातृ पितृ परिहार	26.517	2.949	25.283	2.518	2.464	असार्थक

सारणी संख्या 1 उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के पारिवारिक संबंधों में छात्र एवं छात्रा में प्राप्तांकों के माध्य और मानक विचलन को दर्शाती है। पारिवारिक संबंधों में 9 कारक शामिल हैं जैसे कि माता की स्वीकृति, पिता की स्वीकृति, माता–पिता की स्वीकृति, माता की एकाग्रता, पिता की एकाग्रता, माता–पिता की एकाग्रता, माता का परिहार, पिता का परिहार एवं माता–पिता का परिहार।

परिणाम का विश्लेषण करने पर पाया कि इन उप चरों में से माता पिता की स्वीकृति, माता पिता की एकाग्रता, माता का परिहार तथा माता पिता का परिहार में छात्र एवं छात्राओं के मध्य कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नही हुआ हैं। वहीं पारिवारिक संबंध के अन्य उपचरों में छात्र और छात्राओं के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ हैं। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि पिता की स्वीकृति अपेक्षाकृत छात्रों में अधिक है वही माता की स्वीकृति छात्राओं में अधिक हैं। एकाग्रता की दृष्टि से माता अपने बेटों के प्रति ज्यादा एकाग्र पाई गई वहीं पिता अपने बेटियों के प्रति अधि एकाग्र पाये गये। परिहार की दृष्टि में छात्र और छात्रा दोनो ही माता से बचने का प्रयास करते हैं वहीं छात्राओं की तुलना में छात्र अपने पिता से ज्यादा बचने की कोशिश करते हैं। मुख्य निष्कर्ष यह प्राप्त हुआ कि स्वीकारोक्ती, एकाग्रता और परिहार में माता पिता सामुहिक रूप से अपने लड़के और लड़कियों के संबंध में समान विचार रखते हैं। अतः हमारी पहली परिकल्पना उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के पारिवारिक संबंधों में लिंग (छात्र एवं छात्रा) का कोई सार्थक अन्तर नही होता हैं, मान्य साबित हुई।

अध्ययन आदत

सारणी संख्या 2 में छात्र–छात्रों की अध्ययन आदतों के मध्यमान, मानक विचलन और टी परीक्षण को दर्शाया गया हैं।

चर	छात्र (N=60)		छात्रा (N=60)		टी मान	सार्थकता स्तर
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
बजट समय	3.350	1.132	4.167	1.251	.3.749	0.01
शारीरिक स्थिति	5.083	1.109	6.350	1.412	.5.464	0.01
पढ़ने की क्षमता	7.100	1.115	8.183	1.228	.5.058	0.01
नोटस् लेना	2.183	1.097	3.600	1.417	.6.125	0.01
सीखने की प्रेरणा	4.983	1.255	6.100	1.285	.4.815	0.01
स्मृति	3.100	1.115	4.317	1.308	.5.482	0.01
परिक्षा लेना	9.117	1.136	10.233	1.212	.5.205	0.01
स्वास्थ्य	4.183	1.127	5.067	1.351	.3.888	0.01
कुल	39.100	2.673	48.017	4.692	.12.791	0.01

सारणी संख्या 2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के अध्ययन आदतों में छात्र एवं छात्रा में प्राप्तांकों के माध्य और मानक विचलन को दर्शाती है। अध्ययन आदत में बजट समय, शारीरिक स्थिति, पढ़ने की क्षमता, नोट लेने, सीखने की प्रेरणा, स्मृति, परीक्षा लेने और स्वास्थ्य जैसे उप चर शामिल हैं।

परिणाम का विश्लेषण करने पर पाया कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के अध्ययन आदतों के सभी उपचरों और छात्र छात्राओं के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया। परिणाम से यह भी स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में छात्रों की तुलना में छात्राओं में अध्ययन आदतें अधिक विकसित देखी गई। अतः हमारी दूसरी परिकल्पना उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के अध्ययन आदतों में लिंग (छात्र एवं छात्रा) का कोई सार्थक अन्तर नही होता हैं, अमान्य साबित हुई

पारिवारिक संबंध एवं अध्ययन आदत के मध्य सहसंबंध

सारणी संख्या 3 में छात्र–छात्रों के पारिवारिक संबंधों एवं अध्ययन आदतों के मध्य सहसंबंध को दर्शाया गया हैं।

		अध्ययन आदत
पारिवारिक संबंध	पियर्सन सहसंबंध गुणांक	0.203
	सार्थकता (2-tailed)	असार्थक
	N	60

सारणी संख्या 3 के परिणामों से स्पष्ट होता है कि पारिवारिक संबंधों और अध्ययन की आदत के मध्य सहसंबंध गुणांक 0.203 प्राप्त हुआ जो कि पर असार्थक हैं। अर्थात उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के पारिवारिक संबंधों और अध्ययन की आदत के मध्य कोइ भी सार्थक संबंध नही पाया गया। अतः हमारी तीसरी परिकल्पना उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के पारिवारिक संबंध और अध्ययन आदतों में सार्थक सहसंबंध होता हैं, अमान्य साबित हुई।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य पारिवारिक संबंधों और अध्ययन की आदत में लिंग अंतर को मापना है। आंकड़ों का विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि पारिवारिक संबंधों के उपचरों स्वीकारोक्ती, एकाग्रता और परिहार में माता पिता सामुहिक रूप से अपने लड़के और लड़कियों के संबंध में समान विचार रखते हैं। परिणाम से यह भी स्पष्ट होता है कि अध्ययन की आदतों को ले कर छात्र और छात्राओं में सार्थक रूप से भिन्नता हैं। वहीं पारिवारिक संबंध एवं अध्ययन आदत में कोई सार्थक संबंध नहीं पाया गया।

संदर्भ ग्रन्थ

1. Dehbozorgi GH, Mooseli HA.Survey on dropout risk factors among medical students, Shiraz Medical University, 1999. *J Babol Univ Med Sci.* 2003;5:74–8.
2. Dissanayake, E. (2000). Antecedents of the temporal arts in early mother-infant interaction.In The origins of music (pp. 389–410). Cambridge, MA, US: The MIT Press.
3. Kochanska, G., Friesenborg, A. E., Lange, L. A., & Martel, M. M. (2004).Parents' Personality and Infants' Temperament as Contributors to Their Emerging Relationship. *Journal of Personality and Social Psychology, 86*(5), 744–759.
4. Murray, L., & Trevarthen, C. (1986).The infant's role in mother–infant communications. *Journal of Child Language, 13*(1), 15–29.
5. Trevarthen, C. (1993). The self born in intersubjectivity: The psychology of an infant communicating. In U. Neisser (Ed.), *The perceived self: Ecological and interpersonal sources of self-knowledge* (pp. 121–173). Cambridge University Press.